अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

सोशल मी डया की लोकतंत्र में भू मका: एक रणनीतिक दृष्टिकोण

डॉ0 रमेश कुमार, सह-आचार्य, राजनीतिक वज्ञान वभाग, केंद्रीय वश्व वद्यालय, हरियाणा
ईमेल आईडी : **deswal0001@yahoo.com**

सार:-

आज का दौर सोशल मी डया का है। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी क 21वीं सदी की दुनिया सोशल मी डया की है। वर्तमान काल में सोशल मी डया लोगों की जिंदगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। भारत वश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। भारत जैसे चुनावी जनतंत्र वाले देश में हाल के ही वर्षों में सोशल मी डया एक सबसे बड़ी ताकत के रूप में उभरी है। देश और दुनिया के सभी राजनेता व भन्न सोशल मी डया प्लेटफॉर्म पर स क्रय रहते हैं। आज के इस युग में कसी भी राजनेता की लोक प्रयता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है क उसके सोशल मी डया पेज पर कतने फॉलोअर्स वद्यमान है। आज सोशल मी डया आम जनमानस के वैचारिक अ भव्यक्ति के साधन के रूप में उभर चुका है। इस माध्यम ने समाज के प्रत्येक आयु वर्ग को हर मुद्दे पर अपनी बेबाक राय रखने का एक सुनहरा मौका प्रदान कया है। इंटरनेट के वकास के साथ ही सोशल नेटव र्कंग के द्वारा इस नए मंच का वकास हुआ है। यह मंच मनोरंजन, सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक, अकाद मक व साहित्य आदि वषयों पर परस्पर और सामूहिक वचार वमर्श का एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली साधन बन चुका है। सोशल मी डया की इस ताकत को पहचानते हुए देश और वदेश के सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनि ध इस माध्यम को अपने पक्ष में करने में जुटे हुए हैं। हमारे भारत देश में पछले 10 वर्ष के दौरान चुनाव आयोग की सख्ती के कारण चुनाव प्रचार अ भयानों में जहां प्रचार साधनों के उपयोग में बहुत बड़ी कमी आई है वहीं अब सोशल मी डया का प्रभाव बढ़ गया है। इसके फलस्वरुप प्रत्येक चुनाव के दौरान चुनाव आयोग की नजर इस माध्यम पर रहती है की सभी राजनीतिक दलों ने अपने-अपने आईटी सेल स्था पत कए हैं। जिनके अंदर आईटी प्रोफेशनल्स से लेकर सोशल मी डया के

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

जानकार स क्रय रहते हैं। यह सेल व भन्न सोशल मी डया प्लेटफॉर्म पर अपनी पार्टी और उसके जनप्रतिनि धयों की नीतियों का प्रचार-प्रसार करते रहते हैं। सोशल मी डया के माध्यम से लोकतांत्रिक स्पेस की रचना हो चुकी है। देखते-देखते लोकतांत्रिक स्पेस एक लोकतांत्रिक शक्ति या ह थयार बन चुका है। चुनाव के अंदर सोशल मी डया की भू मका दिनों-दिन बढ़ती ही जा रही है। इस लए आज के दिन सोशल मी डया की कसी भी क्षेत्र में अनदेखी नहीं की जा सकती है यह लोकतंत्र स्पेस एक सच्चाई बन चुका है। इसका उपयोग कैसे हो रहा है? कौन कर रहा है? यह दूसरा सवाल है। सोशल मी डया ने एक ऐसे स्पेस की रचना कर डाली है जिसका उपयोग लोकतंत्र वरोधी भी खूब कर रहे हैं। लोकतंत्र की खूबसूरती इसी बात में है क उसके वरोधी भी इसका उपयोग करते हैं। इस शोध पत्र के द्वारा लोकतंत्र में सोशल मी डया की भू मका को उजागर कया गया है। आज के दौर में सोशल मी डया कस प्रकार से लोकतंत्र में अपनी भू मका निभा रहा है? उसका वर्णन कया गया है। इस शोध पत्र में प्राथ मक और द् वतीयक स्त्रोतों का प्रयोग कया गया है।

मुख्य शब्द:- लोकतंत्र, नेटव र्कंग, सोशल मी डया, चुनाव, राजनीतिक दल, जनप्रतिनि ध

परिचय:-

समाज की प्रगति व उत्थान में पत्रकारिता का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है समाज निष्पक्ष पत्रकारिता की अपेक्षा रखता है पत्रकारिता जगत से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को समाज के कल्याण और हितों के लए काम करना चाहिए लोकतंत्र में मी डया की बहुत बड़ी भू मका होती है मी डया को आलोचना करने का पूरा अ धकार है ले कन रचनात्मक कार्यों को मी डया के द्वारा प्राथ मकता से प्रका शत कया जाना चाहिए। सं वधान ने समाज में सबको बराबर के अ धकार दिए हुए हैं ले कन समाज में लोगों के अ धकार अभी तक सुर क्षत रहेंगे जब तक व्यक्ति अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहेंगे अगर आजादी की लड़ाई की बात करें तो

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

उसमें भी पत्रकारिता का बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा था आज भी देश के वकास और उसके नव निर्माण में पत्रकारिता जगत अग्रणी भू मका निभा रहा है जब देश गुलाम था उस समय अंग्रेजी हुकूमत के पांव करने के लए देश के अलग-अलग क्षेत्रों में जनता को जागरूक करने और अंग्रेजों की अस लयत लोगों तक पहुंचाने के लए बहुत सारे अखबार पत्र-पत्रिकाओं ने अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन बड़े ही प्रभावशाली तरीके से कया था।[1]

वश्व के लोकतांत्रिक देशों में सरकार के तीन मुख्य अंगो वधायिका, कार्यपा लका और न्यायपा लका के क्रयाकलापों पर नजर रखने के लए मी डया को चौथे स्तंभ के रूप में पाया जाता है। 18वीं सदी के बाद से खासकर अमेरिका स्वतंत्रता आंदोलन और फ्रांसीसी क्रांति के समय से जनता तक पहुंचने और समाज में लोगों को जागरूक कर सक्षम बनाने में मी डया ने एक प्रभावशाली भू मका निभाई है। मी डया अगर सकारात्मक भू मका अदा करें तो कसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और राष्ट्र को राजनीतिक, सामाजिक, आ र्थक और सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ व समृद्ध बनाया जा सकता है। वर्तमान काल में मी डया की उपयो गता उसके महत्व और उसकी प्रभावशाली भू मका निरंतर बढ़ती ही जा रही है। कोई भी समाज, सरकार, संस्था, समूह, वर्ग और व्यक्ति मी डया की उपेक्षा कर आगे नहीं बढ़ सकता है। आज जीवन के प्रत्येक पक्ष में मी डया एक बहुत आवश्यक अंग बन गया है। अगर हम यह देखें क समाज कसे कहते हैं तो यह बात हमारे सामने आती है क लोगों की भीड़ को हम समाज नहीं कह सकते हैं क्यों क समाज का अर्थ होता है संबंधों का आपस में परस्पर ताना-बाना। जिसमें वचारशील मनुष्य वाले समुदायों का अस्तित्व वद्यमान रहता है। मी डया एक ऐसा तंत्र है जिसमें इलेक्ट्रॉनिक माध्यम, रे डयो, सनेमा, इंटरनेट, पत्रकार, प्रंटिंग प्रेस आदि सूचना के माध्यम शा मल होते हैं। अगर समाज में मी डया के रोल की बात करें तो इसका सीधा सा

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

तात्पर्य यह हुआ क समाज में मी डया प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से क्या योगदान दे रहा है तथा उसके उत्तरदायित्व के निर्वहन के दौरान समाज पर उसका कैसा प्रभाव पड़ रहा है?[2]

लोकतंत्र का अर्थ व व्याख्या:-

प्रजातंत्र का शाब्दिक अर्थ होता है लोगों का शासन। लोकतंत्र एक ऐसी शासन व्यवस्था का नाम है जिसमें जनता अपना शासक स्वयं चुनती है। यह शब्द लोकतांत्रिक व्यवस्था और प्रजातांत्रिक राज्य दोनों के लए प्रयुक्त होता है। यद्य प लोकतंत्र शब्द का प्रयोग राजनीतिक संदर्भ में कया जाता है परंतु लोकतंत्र का सद्धांत दूसरे समूह और संगठनों के लए भी उपयुक्त है। सामान्यता प्रजातंत्र व भन्न सद्धांतों के मश्रण से बनता है, पर मतदान को प्रजातंत्र के अ धकांश प्रकारों की चरित्रगत वशेषता माना जाता है।[3]

मी डया 1780 में 'द बंगाल गजट' की शुरुआत के साथ अस्तित्व में आया और तब से यह परिपक्व हो गया। यह मानव मन और राय को आकार देने में बहुत महत्वपूर्ण भू मका निभा रहा है। पूरे वश्व में लोकतंत्र लोक प्रय है। मानव अ धकारों की स्वतंत्रता और सं वधान की सर्वोच्चता सच्ची लोकतांत्रिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण तत्व हैं। एक लोकतांत्रिक देश के लए सूचना तक पहुंच आवश्यक है, पढ़ने या लखने की स्वतंत्रता उजागर करने के लए एक महत्वपूर्ण तत्व है

मी डया के द्वारा सत्य को प्रकट करना, नागरिकों का आत्म- वकास और आत्म-पूर्ति सुनिश्चित करना और उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना इत्यादि कार्य बड़ी आसानी से कए जाते है। दूसरे शब्दों में, लोकतंत्र को सामान्य शब्दों में सरकार का एक रूप समझा जाता है जो लोक प्रय संप्रभुता के अधीन है। लोकतंत्र की मुख्य वशेषताओं की एक सूची है जिसमे लोगों की संप्रभुता, कानून का शासन, सामाजिक और राजनीतिक समानता, सार्वभौ मक के माध्यम से निर्वा चत सरकार शा मल हैं।[4]

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

सोशल मी डया एक यन्त्र के रूप में:-

को वड-19 के काल में सोशल मी डया लोगों के लए एक राहत का जरिया बनकर साथ खड़ा हुआ है। लोग मदद की गुहार लगा रहे हैं और दुख की इस घड़ी में उनकी ओर मदद के हाथ भी बढ़ रहे हैं। को वड-19 का संक्रमण तेजी से लोगों को अपना शकार बना रहा है। मरीजों की अस्पताल में संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। पूरे देश में स्वास्थ्य सेवाएं चरमरा सी गई है। वही को वड-19 के फैलते संक्रमण से डर का माहौल बना हुआ है। मगर ऐसी बदहाल स्थिति में लोगों ने अभी तक आस नहीं छोड़ी है और वह इस दुख की घड़ी का बड़ी गंभीरता से सामना कर रहे हैं। ऐसे में सोशल मी डया लोगों के लए एक राहत का जरिया बना हुआ है। सोशल मी डया पर लोग अपने मरीजों के लए रेमदेसी वर इंजेक्शन, ऑक्सीजन, अस्पताल एवं बेड आदि की मांग कर रहे हैं, वही ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो इस भयावह स्थिति में खुलकर मदद कर रहे हैं। इस तरह की चीजें जहां लोगों को राहत देती है वहीं इससे यह बिल्कुल साफ हो जाता है क सोशल मी डया मनोरंजन के अलावा भी कई क्षेत्रों में काफी मददगार साबित हो सकता है। इस समय जब को वड-19 के संक्रमण की दूसरी लहर ने देशवा सयों को बेहाल कर रखा है और दिनों दिन मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही है तब सोशल मी डया के जरिए लोग मदद का हाथ बढ़ा रहे हैं। सोशल मी डया के जरिए आवश्यक दवाओं, बेड, अस्पताल व रेमदेसी वर इंजेक्शन की व्यवस्था करके लोगों की मदद कर रहे हैं। वही ऐसी खबरें भी सामने आई है क कुछ लोग भोजन की व्यवस्था आदि करके भी मदद कर रहे हैं। हालां क जब तक सोशल मी डया के जरिए जाल में फंसा कर ठगी करने वाले लोगों की बातें हमारे सामने आती है और अक्सर फर्जी खबरों अफवाहों के लए भी कुछ लोग सोशल मी डया का इस्तेमाल करते रहते हैं। मगर इस बात से कोई इनकार नहीं कया

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

जा सकता को वड-19 के काल में सोशल मी डया एक मदद मांगने वालों और करने वालों के बीच में एक महत्वपूर्ण माध्यम बना हुआ है।[5]

सोशल मी डया का महत्व और भू मका:-

आज के दौर में सोशल मी डया की भू मका लगातार बढ़ती जा रही है ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जहां सोशल मी डया के माध्यम से अपनी बात नहीं पहुंचाई जा सकती। सोशल मी डया की भू मका का व भन्न क्षेत्रों में वर्णन इस प्रकार से है-

सामाजिक परिवर्तन के लए सोशल मी डया:-

सोशल मी डया के वकास के बाद मी डया का दायरा बढ़ गया है। सोशल मी डया के आने के बाद लोगों की आंखें व कान सब जगह पहुंच गए हैं। अब वे न्यूज़ के लए कुछ टीवी चैनलों के कैमरा कर्मचारियों तक ही सी मत नहीं है बल्कि सोशल मी डया एक ऐसा मंच है जो जनता की राय को आसानी से बिना छेड़छाड़ कए सीधा जनता को दिखाता है। यह समाज की नब्ज को जानता है और यहां तक क न्यूज़ चैनल भी रुझानों के लए सोशल पर लगातार नजर बनाए रखते हैं।

बीते कुछ सालों में हमने यह पाया क बहुत ही महत्वपूर्ण खबरें सोशल मी डया से ही समाज के सामने आई है। यह खबरें सामाजिक रूप से प्रासं गक होने के साथ-साथ बहुत महत्वपूर्ण भी थी जिस पर सोशल मी डया ने प्रकाश डाला। सोशल मी डया ने सरकार व जनता के बीच दूरी को भी कम करने का काम कया है। जनता अब अ धक जागरूक हो गई है और वह जानती है क नेता कैसे कानूनों और नीतियों के साथ छेड़छाड़ करते हैं जो क उनकी भलाई के लए बनाए जा रहे हैं। इसके लए जनता आपस में ही मुद्दों पर वचार वमर्श करती है। अब वह दिन चले गए जब सरकार बंद दरवाजों के पीछे एक कमरे के अंदर कानून बनाती

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

थी और पास करती थी तथा देश की जनता को इनका महीनों बाद ही पता चलता था। इसके लए सोशल मी डया को धन्यवाद देना होगा क उसने राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा और व भन्न प्रकार के कानून जो सरकार द्वारा पारित कए जाते हैं उसके ऊपर व्यापक रूप से पहले से ही चर्चा प्रारंभ हो जाती है। कुछ जनप्रतिनि ध अपने वोट बैंक को सुर क्षत रखने के लए एवं अपने स्वार्थों की पूर्ति के लए समाज को वभाजित करने का प्रयास करते हैं परंतु अब सोशल मी डया के कारण यह सारी सीमाएं समाप्त हो गई है और जनता अ धक जागरूक और सचेत हो गई है। इस लए अब जनता को ज्यादा देर तक अंधेरे में नहीं रखा जा सकता है। अब कसी भी राजनेता को भाषण में बयान देने से पहले अ धक जागरूक वह तर्कशील होने की आवश्यकता है। लोग कसी भी नौटंकी के पीछे एक गुप्त उद्देश्य और संकीर्ण वचार का तुरंत पता लगा लेते हैं और समय रहते उसकी आलोचना शुरु कर देते हैं। जिसके फलस्वरूप जनप्रतिनि धयों को कई बार अपने फैसले पलटने भी पढ़ते हैं।[6]

सोशल मी डया और जन- सहभा गता:-

आज के समय में राजनीतिक प्रतिनि धयों द्वारा सोशल मी डया के माध्यम से जनता से जुड़ना आवश्यक हो गया है ता क अपनी बात को कम समय में ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाया जा सके। वश्व भर के राजनेता आज अपनी बात को लोगों के बीच में रखने के लए सोशल मी डया का उपयोग कर रहे हैं। सोशल मी डया के माध्यम से न्यूनतम प्रयासों के साथ अपनी बात को बड़े पैमाने पर आम जनमानस तक पहुंचाया जा सकता है। वश्व के दो सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत और अमेरिका के चुनाव के समय नरेंद्र मोदी और ट्रंप के द्वारा बहुत बड़ी मात्रा में सोशल मी डया का प्रयोग कया गया था। सरकार के जनप्रतिनि ध अपनी पार्टी के वचार और नीतियों को सोशल मी डया के जरिए ही लोगों तक पहुंचा सकते हैं। आम जनमानस सरकार की नीतियों की आलोचना व समीक्षा आज खुलकर

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

सोशल मी डया पर कर रहा है जिसके अच्छे परिणाम हमारे सामने नजर आ रहे हैं। सरकार अपनी नीतियों को प्रभावी तरीके से लागू करने के लए भी सोशल मी डया का सहारा समय समय पर लेती रहती है। अतः हम कह सकते हैं क सरकार और लोगों के बीच में सोशल मी डया एक कड़ी का कार्य करती है।[7]

सोशल मी डया और जनमत:-

कुछ समय पहले चुनाव में मी डया मैनेजमेंट का एक काम देखने वाली कंपनी को एक राजनीतिक दल द्वारा एक इलाके में लोगों के वोट को अपने पक्ष में करने का जिम्मा दिया गया। उस कंपनी ने उस इलाके में रहने वाले सभी वोटरों के प्रोफाइल को एकत्रित कया और उनकी पसंद और नापसंद को रिकॉर्ड कया। इसके पश्चात उनके टाइमलाइन और व्हाट्सएप पर उनकी पसंद के पोस्ट ज्यादा से ज्यादा भेजे। बाद में पोस्ट के कंटेंट को बदल दिया गया और उस दल से जोड़कर पोस्ट भेजे जाने लगे। सर्फ 6 महीनों में लगभग 90 फ़ीसदी लोगों का ब्रेनवाश करने की को शश उस कंपनी ने की। अब सवाल यह उठता है क क्या सोशल मी डया देश के वोटरों के मजाज को बदल सकता है और उन्हें कसी पार्टी के साथ जोड़ सकता है? क्या सोशल मी डया चुनाव के दौरान वोटरों के बीच प्रचार करने और उन को प्रभा वत करने का सबसे मजबूत आधार बन गया है? क्या सोशल मी डया इस्तेमाल करने के दौरान आम लोगों की प्राइवेसी पर भी हमला कर रहा है? यह तमाम सवाल एक बार फर उठ खड़े हुए हैं। साथ ही चुनाव के दौरान सोशल मी डया को लेकर ववाद भी खड़े होते रहते हैं। हालां क चुनाव आयोग ने अपनी ओर से सोशल मी डया पर निगरानी रखने के कई प्रकार के तरीकों को अपनाया हुआ है। बहुत सारे वशेषज्ञों का यह भी मानना है क चुनाव आयोग की इस पहल के बाद भी इस पर पूरी तरह नियंत्रण नहीं पाया जा सका है। सोशल मी डया पर नियंत्रण होने के बाद चुनाव को प्रभा वत करने वाले और फेक न्यूज़ से जुड़े कांटेक्ट को

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

हटाने की दिशा में एक बड़ी कार्रवाई हुई है। चुनाव आयोग के निर्देशों के बाद अब तक 628 कांटेक्ट सोशल मी डया से हटाए गए। इनमें सबसे ज्यादा 574 के लगभग फेसबुक पेज से जुड़े हुए थे। वही फेसबुक ने अपने स्तर पर कार्रवाई करते हुए 700 से ज्यादा पेज को डलीट करने का काम कया है और फेसबुक ने कहा क ये पेज गलत सूचना की मदद से वोटरों को प्रभा वत करने की को शश कर रहे थे। इस प्र क्रया में भारत के लगभग सभी दल से जुड़े पेज थे।

चुनाव आयोग के इस बारे में जुड़े हुए कुछ नियम:-

1. चुनाव प्रचार खत्म होने के बाद वोटिंग से 48 घंटे पहले सोशल मी डया का उपयोग प्रचार के लए नहीं कया जाएगा। इसके लए सोशल मी डया कंपनियां अपने स्तर पर इसकी देखभाल रखेंगी।

2. अगर सोशल मी डया पर कोई भी जनप्रतिनि ध कोई 'हेट स्पीच' अपनी पोस्ट करता है तो वह भी कार्रवाई के दायरे में आएगी।

3. प्रत्येक राजनीतिक दल को सोशल मी डया पर होने वाले खर्च के बारे में अपनी पूरी जानकारी एक फॉर्म में भर कर देनी होगी।

4. गूगल चुनाव प्रचार के दौरान राजनीतिक दलों की ओर से कए गए प्रचार की लस्ट बनाएगा और उसकी पूरी रिपोर्ट चुनाव आयोग को प्रदान करेगा।[8]

सोशल मी डया और प्रजातंत्र:-

आज के युग में सोशल मी डया केवल राजनीतिक और चुनावी अ भयान में ही प्रभावी माध्यम नहीं है बल्कि यह शासन प्रशासन के संचालन में भी एक महत्वपूर्ण भू मका निभा रहा है। सच्चे अर्थों में सोशल मी डया प्रजातंत्र की मुख्य अवधारणा 'जनता का, जनता के

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

लए, जनता के द्वारा, शासन को फलीभूत करने में एक महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है। इसमें कोई शक नहीं है क भारतीय युवा देश के भ वष्य के साथ-साथ देश के राजनीतिक बदलाव और वकास का एक बहुत ही महत्वपूर्ण भाग है। आज राष्ट्र की 65 फ़ीसदी आबादी 35 वर्ष से कम आयु के लोगों की है। सूचना क्रांति के इस दौर में भारतीय युवाओं के लए सोशल मी डया एक बहुत बड़ा जरिया बन चुका है। एक शोध के मुताबिक देश के शहरी भागों में प्रत्येक चार में से तीन युवा कसी न कसी रूप में सोशल मी डया के कसी प्लेटफार्म से जुड़े हुए हैं तथा 84 फ़ीसदी युवा आबादी अपने मोबाइल फोन के द्वारा सोशल मी डया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, मैसेंजर एवं ब्लॉक आदि से जुड़े हुए हैं। वश्व भर में लगभग 200 नेटव र्किंग साइट्स काम कर रही है। 2014 के आम चुनाव में सोशल मी डया प्रजातंत्र की एक नई आवाज बनकर उभरा। जिसने भारतीय युवा मतदाताओं को सत्ता परिवर्तन के लए लामबंद करने का काम कया। ले कन इसके बाद सोशल मी डया में युवाओं की कोई खासी स क्रयता दिखाई नहीं दी। दरअसल युवाओं को समझना होगा क महज सत्ता परिवर्तन से व्यवस्था में कोई बदलाव नहीं हो सकता बल्कि इसके लए उन्हें लगातार प्रयास करना होगा और सोशल मी डया इस में एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक माध्यम बन सकता है।[9]

सोशल मी डया के लाभ:-

सोशल मी डया के लाभ मुख्य रूप से इस प्रकार है

■ सूचना का लोकतंत्रीकरण:

- सोशल मी डया बहुत बड़े स्तर पर संचार सु वधाओं का लोकतंत्रीकरण करने का कार्य करता है।

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

● वश्व भर के लोगों ने सूचना को सुर क्षत रखने और इसका प्रचार प्रसार करने के पारंपरिक साधनों को चलन से बाहर कर दिया है। वह लोग अब सर्फ इसके उपभोक्ता ही नहीं है बल्कि सामग्री के निर्माता और प्रचारक भी बन गए हैं।

■ नए अवसर:

● आभासी दुनिया का वकास ऐसे लोगों को अपनी आवाज को मुखर करने का अवसर देता है जिन्हें या तो अभी तक सुना ही नहीं गया है अर्थात समाज का अपे क्षत आभासी दुनिया के माध्यम से यह लोग दूसरे लोगों से जुड़ते है और अपने को स्था पत कर पाते हैं। उदाहरण के लए अगर व्यवसाय के रूप में देखें तो यूट्यूबर का उदय इस घटना का प्रमाण है।

■ व्यापक और वषय समुदाय:

● भौतिक समुदायों की तुलना में ऑनलाइन समुदाय बहुत ही व्यापक और वषम है।

● प्राचीन काल में भारत में कई समुदायों को सार्वजनिक प्रवचनों में भाग लेने तथा खुद को संगठित करने व अपनी सोच और वचारों को आगे बढ़ाने तक की अनुमति नहीं थी। उनके वचारों, महत्वाकांक्षाओं, अनुभवो व मांगों को काफी हद तक अनसुना कर दिया जाता था।

■ सस्ता और ऑनलाइन:-

● सोशल मी डया के महत्वपूर्ण कंटेंट के निर्माण में महत्वपूर्ण भौतिक पदार्थों की तुलना में बहुत कम ही निवेश की आवश्यकता महसूस होती है। यह अक्सर कोमल कौशल से ही संचा लत होता है।

● तकनीकी की सहायता से कोई भी व्यक्ति एक अच्छा प्रभावी मौ लक और प्रमा णक ऑनलाइन कंटेंट तैयार कर सकता है।

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

■ आ धपत्य का मुकाबला:

● सोशल मी डया परंपरागत खला ड़यों के आ धपत्य का मुकाबला करने के लए एक बढ़िया उपकरण के रूप में काम करता है।

● सोशल मी डया ने पूरी दुनिया में ज्ञान का एक वैकल्पिक स्त्रोत प्रदान करने का कार्य कया है।जिसके चलते मुख्यधारा वाला मी डया फर्जी खबरों व उनके प्रचार-प्रसार के लए सार्वजनिक आलोचनाओं के घेरे में आ गया है।

■ दूरी समाप्त:

● आज वश्व भर में सोशल मी डया ने लोगों के बीच की दूरी को कम करने का प्रयास कया है।

● आज वश्व भर के लोग, दोस्त व परिवारजन दूर होने के बावजूद भी सोशल मी डया के माध्यम से एक दूसरे से जुड़े रहते हैं।

■ सरकार के साथ सीधा संवाद:

● सोशल मी डया के प्लेटफार्म द्वारा आम लोगों को सरकार से सीधे बातचीत करने और सरकारी सेवाओं का लाभ उठाने का मौका मल रहा है।

● जनसाधारण सरकारी सेवाओं से हुए सवालों और परेशानियों को सोशल मी डया पर डालने व सीधे मंत्रालय को पोस्ट कर देते हैं। जो इन दिनों एक आम बात हो गई है।[10]

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

सोशल मी डया की आलोचना:

ऐसा नहीं है क सोशल मी डया ने सकारात्मक पक्षों को उत्पन्न नहीं कया। आज ऐसे बहुत से लोग हैं जो बोलना चाहते थे, पर उन्हें कोई मंच उपलब्ध नहीं था। आज सोशल मी डया ने उन्हें वह मंच दिया है जहां वे अपनी बात रख सकते हैं, अपनी प्रतिभा दिखा सकते हैं और लोग ऐसा कर भी रहे हैं। परंतु यह भी सच है क कोई भी टेक्नोलॉजी अपने आप में बुरी नहीं होती। उसका सदुपयोग या दुरुपयोग उसे अच्छा या बुरा साबित करता है। सोशल मी डया ने मौन की संस्कृति, आक्रामकता की संस्कृति और वरोध की संस्कृति को तीव्र कया है। ये तीनों एक सीमा तक तो लोकतांत्रिक व्यवस्था के लए ठीक हैं, ले कन इनसे लोकतंत्र के लए खतरा भी उत्पन्न हुआ है। राजनीतिक उद्देश्यों के लए जब व्यक्ति सोशल मी डया का उपयोग करते हैं, मी डया कतना सही है कतना गलत, कौन-सी खबर सच है और कौन-सी झूठ, पुरानी सूचनाओं को कतने गलत तरीके से पेश कया जा रहा है, यह सब क्यों कया जा रहा है, जानना ज्यादा आवश्यक है। मी डया खासतौर पर सोशल मी डया जिस प्रकार की भू मका निभा रहा है, वह संदेह के घेरे में है।

युवा पीढ़ी इस वक्त एक ऐसे संक्रमणकाल से गुजर रही है जो अनेक प्रकार की सामाजिक चंताओं को उत्पन्न करता है। सोशल मी डया के प्रति युवाओं के एक बहुत बड़े हिस्से का आकर्षण इसके आदी होने के स्तर तक जा पहुंचा है। वह सामाजिक जीवन के एक बहुत बड़े भाग को प्रभा वत एवं निर्धारित करने लगा है। देर रात तक चैटिंग करना या आनलाइन गेम खेलना, सेल्फी लेने का शौक, वॉट्सएप का अनवरत प्रयोग करना और अध्ययन सामग्री के लए व भन्न साइटों की खोज में संलग्न रहना, वे पक्ष हैं जो यह दर्शाते हैं क सोशल मी डया ने सामाजिक जीवन को व्या धकीय स्तर तक प्रभा वत कया है। इसी लए वश्व स्वास्थ्य संगठन ने आनलाइन गेम खेलने की लत को मान सक रोग की श्रेणी में शा मल

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

कया है। सोशल मी डया और गैजेटों की लत के कारण युवाओं में शारीरिक और मान सक व्या धयां तेजी से बढ़ रही हैं। इससे निराशा व कुंठा पनप रही हैं और एक नए प्रकार की सांस्कृतिक वसंगति को जन्म दे रही हैं। यह संस्कृति न केवल सामाजिक संबंधों में उनकी सहभा गता को कम करती है अ पतु उन्हें भय एवं आक्रामकता का शकार बनाती है। कहीं न कहीं आत्महत्या की प्रवृत्ति के उत्पन्न होने में इस सांस्कृतिक वसंगति की भी भू मका है। सोशल मी डया का एक व शष्ट वर्ग बन गया है। इसमें से कसान, श्र मक, आदिवासी, महिलाओं से जुड़े मुद्दे गायब हैं। ऐसे में यह सवाल तो उठता ही है क सोशल मी डया हा शये के लोगों की आवाज क्यों नहीं बन पाया? इस पर सोचा जाना जरूरी है। एक तबका धीरे-धीरे ऐसा भी उभर रहा है जो सोशल मी डया से ऊब गया है। वह अब कसी भी वषय पर कोई भी प्रति क्रया नहीं करता। लोग अब वरोध के स्वर सुनना नहीं चाहते, उन्हें सर्फ प्रशंसा और समर्थन की आदत हो गई है। इस लए जब मी डया मनुष्य को नियंत्रित करने लगे तो समाज में इसके खतरे दिखाई देने लगते हैं। दासता कसी की भी हो, मनुष्य की या टेक्नोलॉजी की, वकास के मार्ग में बाधा ही उत्पन्न करती है।[11]

निष्कर्ष:

अंतिम रूप मे ये कहा जा सकता है क लोकतंत्र को सफल बनाने में सोशल मी डया की भू मका बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रभावशाली है। सोशल मी डया ने समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी बात जनसाधरण और प्रशासन तक पहुंचाने का अ धकार दिया हुआ है। सूचना के आदान-प्रदान करने मे, समाज मे जनमत तैयार करने में, जनसाधारण की जनचेतना को जागृत करने में, भन्न-भन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के लोगों को आपस में जोड़ने में, व वध मुद्दों और सामाजिक आंदोलनों में भागीदार बनाने की नज़र से सोशल मी डया एक सशक्त माध्यम है। कंतु इसका सावधानीपूर्वक उपयोग करना भी जरूरी है।

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

सोशल मी डया का दुरूपयोग कई प्रकार की वसंगतियों को पैदा करता है। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले में, हरियाणा में जाट आंदोलन के दौरान व कश्मीर में दंगों को भड़काने में सोशल मी डया की बड़ी महत्वपूर्ण भू मका रही थी, जिसमें हज़ारों लोगों को को बेघर होना पड़ा था। कई मां और बहनों के सुहाग उजड़ गए थे। वहीं कई लोगों को अपँग भी हो गए थे। कई बार सोशल मी डया के माध्यम से नारी अस्मिता से खलवाड़ कए जाने की घटनाएं भी सामने आई हैं। सोशल मी डया पर बच्चों के मौ लक अ धकारों का भी हनन होता देखा गया है। सोशल मी डया पर ज्यादा व्यस्त होना व्यक्ति को उसकी मंजिल से भटका सकता है। इस लए यह बहुत आवश्यक है क सरकार इस तरह की नीतियां बनाएं की जिससे सोशल मी डया का सदुपयोग कया जाना सुनिश्चित हो। अभी हाल के दिनों में ही मोदी सरकार ने सोशल मी डया के नजायज पँखो को भी कतरना शुरू कर दिया है जो क बहुत आवश्यक है। अगर सोशल मी डया पर कुछ हद तक सकारत्मक पाबंदियां लगाई जाती है तो यह लोकतंत्र, समाज, राष्ट्र और व्यक्ति वशेष के लए नसंदेह बहुत ही हतकारी साबित होगा।

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

संदर्भ सूची:-

1. अमर उजाला, 25 मई, 2019

2.https://www.drishtiias.com/hindi/mains/modewl-essays/role-of-media-in-society last retrieved on 15 may, 2021

3.दैनिक जागरण, 7 दिसंबर, 2010

4.Sarkar P. Role of Media in Strengthening Democracy in India. J Adv Res Jour Mass Comm 2017; 4(3&4): ISSN 111-115

5.https://hindi.news18.com/news/lifestyle/how-social-media-is-becoming-a-tool-for-goodness-dlnk-3567546.html last retrieved on 18 may, 2021

6.https://www.srisriravishankar.org/hi/blog/post/social-media-for-social-transformation last retrieved on 20 may, 2021.

7.K.Anil kumar, Subhashree Narayanan, Role of social media in political in political campaigning and its evaluation methodology: A Review, Sona Global Management Review, Volume 10, Issues 03, May 2016

8. नवभारत टाइम्स, 28 अप्रैल, 2019

9.हरिभू म, 22 नवंबर, 2018

10.https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/society-and-social-media#: last retrieved on 25 may, 2021

11. जनसत्ता, 12 जून,2019